आज़ादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत जस्सल, साविधार पंचायत करसोग, मंडी में पर्यावरण स्वच्छता जागरूकता कार्यक्रम की रिपोर्ट

हिमालयन वन अनुसन्धान संस्थान, शिमला द्वारा "आज़ादी का अमृत महोत्सव के अतंर्गत " ग्रामीण समुदायों हेतु पर्यावरण स्वच्छता जागरूकता कार्यक्रम आयोजन 09 जनवरी, 2023 को जस्सल, साविधार पंचायत करसोग, मंडी (हि॰प्र॰) में किया। डॉ. जगदीश सिंह, वैज्ञानिक-एफ, प्रभागाध्यक्ष, विस्तार प्रभाग, हि०व०अ०स०, शिमला, ने "विभिन्न पर्यावरण प्रदूषण और इनके दुष्प्रभाव एवं निवारण के बारे मे व्यख्यान दिया। उन्होंने बताया कि पर्यावरण प्रदूषण के मुख्य कारणों में शहरीकरण, औद्योगिकीकरण, खनन, जीवाश्म ईंधन का जलना, प्लास्टिक और कण पदार्थ होते हैं। इसके कारण हमारे वायु, जल एवं स्थल प्रदूषित होते है। पर्यावरण प्रदूषण से ग्लोबल वार्मिंग हो रही है, जिसके फलस्वरूप हिमालयी क्षेत्रों ग्लेशियर तेज़ी से पिघल रहे है, जो कि चिंता का विषय है। धरती पर केवल कुल जल का 5% ही पीने योग्य जल है । डॉ० संदीप शर्मा, निदेशक, हि०व०अ०स०, शिमला, ने वताया कि प्रति वर्ष उत्पादित 380 मिलियन टन प्लास्टिक में से लगभग 31 मिलियन टन पर्यावरण में और लगभग 8 मिलियन समुद्र प्रवेश करता है। उन्होंने कहा कि हमें एकल उपयोग होने वाली चीजों जैसे कि प्लास्टिक का उपयोग न करे। भारत सरकार ने भी एकल उपयोग प्लास्टिक पर बैन लगाया है। उन्होंने विश्व भर में पेयजल में हो रही कमी और गिरते भ-ू जलस्तर के बारे में भी बताया। वर्षाजल को व्यर्थ बहने से रोककर इसे नालियों/पाइप लाइनों के माध्यम से इस प्रकार संग्रहित किया जाना चाहिए ताकि इसका उपयोग फिर से किया जा सके। इसके अलावा उन्होंने बताया कि आधुनिक कृषि पद्धतियों जैसे कि कीटनाशकों और उर्वरकों से मिट्टी प्रदूषित होती है। सिंचाई के पानी में भी कैडमियम, सीसा, पारा और आर्सेनिक जैसी भारी धातुए ंऔर अन्य जैव-विषैले पदार्थ होते हैं। उन्होने सॉइल हेल्थ कार्ड एवं पहाड़ी की ढलान के महत्व पर भी प्रकाश डाला। उन्होने किसानों को साविंधार पंचायत की भौगोलिक स्थिति के लिए उपयुक्त वनस्पति प्रजातियाँ भी सुझाई। एकल प्रयोग प्लास्टिक पर बैन के चलते टौर उगाने की सलाह दी। डॉ॰ शर्मा ने वर्षा जल भंडारण की सलाह दी और कहा कि पारंपरिक तालाब और जल स्त्रोतों का ध्यान रखना चाहिए उससे जल कि उपलब्धता के अलावा और भी लाभ प्राप्त होते हैं। उन्होने केंचुआ की खाद बनाने का भी सुझाव दिया। किसानों के फूल – लकड़ी (*Lantana camara*) संबन्धित प्रश्नो का जबाब देते हुये उन्होनें कहा कि इसे समाप्त करने के लिए लगातार 2.5 वर्ष तक झाड़ी को 8-9 बार काटना पड़ता है। इसे जमीन में 4 इंच नीचे तक जड़ से काट कर पौधे को उल्टा अर्थात जड़ ऊपर टहना नीचे करके सूखने देना चाहिए और उसके बाद जला देना चाहिए । डॉ॰ शर्मा ने बदलते मौसम पर चिंता व्यक्त की और कहा कि हमें भी यथा संभव अपने आस पास जितना हो सके खाली पड़े भ-क्षेत्र में अधिक से अधिक पेड़ लगाने का प्रयास करना चाहिए। उन्होने पदम श्री, फ़ारेस्ट मैन के नाम से विख्यात श्री यादव जी के जीवन पर प्रकाश डाल कर लोगों को प्रोत्साहित किया।

डॉ॰ जोगिंदर सिंह चौहान, मुख्य तकनीकी अधिकारी ने संस्थान के कार्यक्षेत्र तथा कार्यों पर प्रकाश डाला। इसके अलावा उन्होने कहा कि हमे बच्चो में शुरू से स्वच्छता की आदतें डालकर उन्हे पर्यावरण के प्रति जागरूक करना चाहिए, ताकि अभी से उनके मन मस्तिष्क में पर्यावरण के प्रति जागरूकता एवं सकारात्मकता विकसित हो। डॉ॰ चौहान, मुख्य तकनीकी अधिकारी ने संस्थान के गतिविधियों के बारे में प्रकाश डाला और ग्रामीणो से मोटे अनाज (मिलेट्स) जैसे कि बाजरा, ज्वार, ज्वार, रागी, कोदो, कुटकी आदि प्रमुख अनाज के महत्व एवं पुन: इन्हें अपनी खेती में अपनाने पर बल दिया। इसके बाद लोगों के साथ चर्चा हुई। चर्चा दौरान स्थानीय लोगों ने संस्थान से औषधीय पौधों की खेती पर प्रशिक्षण कार्यक्रम करने का आग्रह किया। कार्यक्रम में श्री राकेश कुमार, वन परिक्षेत्र अधिकारी और श्री. कुलवंत राय गुलशन, सीनियर तकनीशियन के अलावा साविधार पंचायत करसोग प्रधान श्री लक्ष्मी दास, उपप्रधान श्री दयानंद वर्मा, सचिव वेसर दत्त, सिलाई मास्टर, मीना देवी, धर्म पाल शर्मा सहित 50 ग्रामीणो ने भाग लिया।

Global Warming and Climate Change
Almost a certain phenomenon (IPCC AR 5)
More than 95% probability that causes are anthropogenic
Severe Impact on
Agriculture
Bio-diversity
Water

Media Coverage (Himachal Dastak 10.01.2022)

पर्यावरण के प्रदूषित होने से हो रही ग्लोबल वार्मिंग

साविधार पंचायत में लोगों को पर्यावरण स्वच्छता पर किया जागरूक

हिमाचल दस्तक ▌करसोग

करसोग के अंतर्गत साविधार पंचायत में पर्यावरण स्वच्छता जागरूकता कार्यक्रम हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला की ओर से आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत ग्रामीण समुदायों के लिए पर्यावरण स्वच्छता जागरूकता कार्यक्रम आयोजन सोमवार को साविधार पंचायत के जस्सल गांव में किया। इसमें डॉ. जगदीश सिंह, वैज्ञानिक-एफ, प्रभागाध्यक्ष, विस्तार प्रभाग ने विभिन्न पर्यावरण प्रदूषण और इनके दुष्प्रभाव एवं निवारण के बारे में व्यख्यान दिया।

उन्होंने बताया कि पर्यावरण प्रदूषण के मुख्य कारण शहरीकरण और औद्योगिकीकरण, खनन, जीवाश्म ईंधन का जलना, प्लास्टिक और कण पदार्थ होते हैं। इसके कारण हमारे वायु, जल एवं स्थल प्रदूषित होते हैं। पर्यावरण प्रदूषण से ग्लोबल वार्मिंग हो रही है, जिसके फलस्वरूप हिमालयी क्षेत्रों ग्लेशियर तेजी से पिघल रहे हैं जोकि चिंता का विषय है। धरती पर केवल कुल जल का 5 प्रतिशत ही पीने योग्य जल है। लोगों के आग्रह पर डॉ. सिंह ने लोगों को जड़ी-बूटियों के बारे में भी बताया तथा क्षेत्र के लिए उपयुक्त जड़ी-बूटियां सुझाईं।

▌**एकल उपयोग की चीजों का इस्तेमाल न करने की दी सलाह**

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. संदीप शर्मा ने बताया कि प्रति वर्ष उत्पादित 380 मिलियन टन प्लास्टिक में से लगभग 31 मिलियन टन पर्यावरण में और लगभग 8 मिलियन समुद्र प्रवेश करता है। उन्होंने कहा कि हमें एकल उपयोग होने वाली चीजों जैसे कि प्लास्टिक का उपयोग न करें। भारत सरकार ने भी एकल उपयोग प्लास्टिक पर बैन लगाया है। उन्होंने विश्व भर में पेयजल में हो रही कमी और गिरते भू-जलस्तर के बारे में भी बताया।

वर्षा के जल को व्यर्थ बहने से रोकें

डॉ. संदीप शर्मा ने कहा कि वर्षा के जल को व्यर्थ बहने से रोककर इसे नालियों के माध्यम से इस प्रकार संग्रहित किया जाना चाहिए ताकि इसका उपयोग फिर से किया जा सके। उन्होंने एकल प्रयोग प्लास्टिक पर बैन के चलते टौर उगाने की सलाह दी तथा इसके उद्योग (पत्तल बनाने का काम) के उज्ज्वल भविष्य की आशा जताई।

कीटनाशकों के प्रयोग से प्रदूषित हो रही मिट्टी

डॉ. संदीप शर्मा ने कहा कि आधुनिक कृषि पद्धतियों जैसे कि कीटनाशकों और उर्वरकों से मिट्टी प्रदूषित होती है। सिंचाई के पानी में भी कैडमियम, सीसा, पारा और आर्सेनिक जैसी भारी धातुएं और अन्य जैव-विषैले पदार्थ होते हैं। उन्होंने इस पर पर भी प्रकाश डाला कि मिट्टी की जांच से अपने लाभ को अधिक एवं चिरंजीवी किया जा सकता है।

औषधीय पौधों की खेती का दिया जाए प्रशिक्षण

इस दौरान स्थानीय लोगों ने संस्थान से औषधीय पौधों की खेती पर प्रशिक्षण कार्यक्रम करने का आग्रह किया। कार्यक्रम में राकेश कुमार, वन परिक्षेत्र अधिकारी और कुलवंत राय गुलशन, सीनियर तकनीशियन के अलावा साविधार पंचायत करसोग प्रधान लक्ष्मी दास, उपप्रधान दयानंद वर्मा, सचिव वेसर दत्त, सिलाई मास्टर, मीना देवी, धर्म पाल शर्मा सहित 50 ग्रामीणों ने भाग लिया।

करसोग की सांविधार (जस्सल) पंचायत में पर्यावरण सरंक्षण व स्वच्छता जागरूकता कार्यक्रम का हुआ आयोजन।